Indian J. Soc. & Pol. 09 (01) :113-116 : 2022 **ISSN: 2348-0084 (PRINT)**
31 JANUARY 2022 **ISSN: 2455-2127(ONLINE)**

भारत–पाकिस्तान सम्बन्ध (मोदी सरकार के प्रथम कार्यकाल के विशेष संदर्भ में)

अरविन्द कुमार सिंह[1], अजय कुमार सिंह[2], बृजेन्द्र सिंह[3]

[1]एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान, गाँधी स्मारक पी.जी. कॉलेज, समोधपुर जौनपुर, उ०प्र०, भारत
[2]एसोसिएट प्रोफेसर एवम् अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग, हण्डिया पी0 जी0 कालेज हंडिया, प्रयागराज, उ0प्रं0, भारत
[3]एसोसिएट प्रोफेसर एवम् अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग, पी0 जी0 कालेज पट्टी, प्रतापगढ़, उ0प्रं0, भारत

ABSTRACT

अविभाजित भारत के विभाजित होने के साथ ही विश्व पटल पर भारत व पाकिस्तान नामक राज्यों का निर्माण हुआ। विभाजन से उपजी समस्याएँ दोनों के सम्मुख थी। दोनों देशों के पृथक अस्तित्त्व में आने के बाद यह आशा जगी कि दोनों पुरानी कटुता को भूलकर विकास के पथ पर अग्रसर होंगे। दोनों देशों के नागरिक शांतिपूर्ण जीवन व्यतीत करेंगें। ब्रिटिश काल में पैदा की गयी कटुता ने शंका व संदेह को बनाए रखा। आरंभ से ही दोनों देशों के बीच संबंध वैमनस्यता पर आधारित थे, जिसकी वजह से दोनों ने विरोधी विदेश व आन्तरिक नीतियों को अपनाया। दोनों देशों के बीच अब तक तीन बार (1947,165,1971) युद्ध व एक सीमित युद्ध (कारगिल 1999) हुआ है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर राजनीतिक व्यवस्थाएँ निरंतर बदल रही हैं ऐसे समय में दोनों देशों के बीच संबंधों का अध्ययन जरूरी है। नाटों फौजों की अफगानिस्तान से वापसी हो रही है। बीस सालों तक सत्ता से दूर रहे तालिबान की वापसी पुनः अफगानिस्तान में हो रही है। चीन–पाकिस्तान धुरी, चीन की भारत को घेरने की नीति भारत के सम्मुख चुनौती पेश कर रही है। ऐसे में यह जानना जरूरी हो जाता है कि वर्तमान मोदी सरकार की पाकिस्तान के संदर्भ में क्या नीति है और वह इन चुनौतियों से निपटने के लिए क्या कर रही है । शोध पत्र का मुख्य ध्येय है– भारत–पाक संबंधों के सुधार हेतु राजनीतिक प्रयासों का अध्ययन करना व भारत–पाक संबंधों पर आतंकवाद के प्रभाव का अध्ययन करना। शोध पत्र की पद्धति ऐतिहासिक है व इसमें द्वितीयक स्रोत प्रयुक्त हुए हैं।

KEYWORDS: *अन्तर्राष्टीय सम्बन्ध, भारत–पाक सम्बन्ध, सार्क, मोदी की विदेश नीति*

अविभाजित भारत के विभाजित होने के साथ ही विश्व पटल पर भारत व पाकिस्तान नामक राज्यों का निर्माण हुआ। विभाजन से उपजी समस्याएँ दोनों के सम्मुख थी। दोनों देशों के पृथक अस्तित्त्व में आने के बाद यह आशा जगी कि दोनों पुरानी कटुता को भूलकर विकास के पथ पर अग्रसर होंगे। दोनों देशों के नागरिक शांतिपूर्ण जीवन व्यतीत करेंगें। ब्रिटिश काल में पैदा की गयी कटुता ने शंका व संदेह को बनाए रखा। आरंभ से ही दोनों देशों के बीच संबंध वैमनस्यता पर आधारित थे, जिसकी वजह से दोनों ने विरोधी विदेश व आन्तरिक नीतियों को अपनाया। दोनों देशों के बीच अब तक तीन बार (1947,165,1971) युद्ध व एक सीमित युद्ध (कारगिल 1999) हुआ है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर राजनीतिक व्यवस्थाएँ निरंतर बदल रही हैं ऐसे समय में दोनों देशों के बीच संबंधों का अध्ययन जरूरी है। नाटों फौजों की अफगानिस्तान से वापसी हो रही है। बीस सालों तक सत्ता से दूर रहे तालिबान की वापसी पुनः अफगानिस्तान में हो रही है। चीन–पाकिस्तान धुरी, चीन की भारत को घेरने की नीति भारत के सम्मुख चुनौती पेश कर रही है। ऐसे में यह जानना जरूरी हो जाता है कि वर्तमान मोदी सरकार की पाकिस्तान के संदर्भ में क्या नीति है और वह इन चुनौतियों से निपटने के लिए क्या कर रही है ।

जसिन्ता मिंज (2013) अपनी किताब 'कारगिल संघर्ष के पश्चात भारत–पाकिस्तान संबंध' में दोनों देशों के बीच शांति प्रयासों व आतंकवाद का अध्ययन करती है। पी. सी. जोशी (2013) अपनी किताब 'पाकिस्तानः ए मुल्लाह– मिलिट्री इंटरप्राइजेज अनलिमिटेड' में द्विराष्ट्रवादी सिद्धान्त, आई. एस. आई. की भूमिका व कश्मीर में छद्म युद्ध की बात करते है। जॉन हैरिस (2015) अपने शोध पत्र 'हिन्दू नेशनलिज्म इन एक्शनः द भारतीय जनता पार्टी एंड इंडियन पोलिटिक्स' में बताते हैं कि मोदी ने पूरे विश्व पर अपनी छाप छोड़ी है। हैरिस भारतीय जनता पार्टी की हिन्दुत्त्व की राजनीतिक विचारधारा की बात भी करते हैं। एल. राधिका देसाई (2018) ने अपने शोध पत्र 'इंडिया–पाकिस्तान डिप्लोमेसीः द मीनिंग ऑफ ए फालस्टेट' में बताया है कि विश्व स्तर पर आतंकवाद के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान ने दक्षिण एशिया को वैश्विक स्तर पर ला खड़ा किया है। यह स्थिति पहले नहीं थी। लेखिका कश्मीर मुद्दे की बात करती है व बताती है कि दोनों देशों के बीच संघर्ष समाप्त होता नहीं दिख रहा है।

भारत–पाक संबंध के प्रमुख बिन्दु हैं – विभाजन से उत्पन्न समस्याएँ, भारत–पाकिस्तान सिन्धु जल सन्धि 1960, कश्मीर समस्या, ताशकंद समझौता 1966, तीसरा भारत–पाक

1: Corresponding Author

युद्ध 1971, शिमला समझौता 3 जुलाई 1972। (बाजपेयी, 2012 पृ. 58–61) भारत व पाकिस्तान का तुलनात्मक अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि एक तरफ भारत स्पष्ट रूप से बहुत बड़ा देश था जिसके पास एक प्रमुख क्षेत्रीय शाक्ति होने के समस्त गुण थे। भारत के पास दक्षिण एशिया का 73 प्रतिशत भूमि क्षेत्रफल, 77 प्रतिशत आबादी, तथा सकल राष्ट्रीय उत्पाद का 77 प्रतिशत था। (वर्ल्ड बैंक रिपोर्ट 1999–2000) इसके बावजूद आजादी के बाद के प्रथम दो दशकों तक भारत की वास्तविक क्षमताएँ सीमित रही, जबकि पाकिस्तानी सेना भारत के संदर्भ में अपने सापेक्षिक बल का अतिशयोक्तिपूर्ण धारणा रखती रही। (कोहन, 2005 पृ. 103) इस वजह से पाकिस्तान ने 'अवास्तविक आशावाद' के साथ बलपूर्वक कश्मीर को पाने की उम्मीद में दो बार युद्ध आरंभ किया। (गांगुली, 2002 पृ 7–8) 1970 के दशक के आरंभ में पाक–अमेरिका–चीन संबंध बेहतर हुए। भारत की बेचैनी बढ़ी तो भारत ने स्थिति से निपटने के लिए सोवियत संघ के साथ 1971 में मैत्री सन्धि की। पाकिस्तान की कलहपूर्ण आन्तरिक स्थिति का लाभ उठाते हुए 1971 में भारत ने पाकिस्तान का विभाजन करा दिया और एक नये राष्ट्र के रूप में बांग्लादेश अस्तित्त्व में आया।

1980 के दशक के मध्य तक क्षेत्रीय व्यवस्था की संरचना में भारत मजबूत देश व पाकिस्तान एक कमजोर देश था। (रियकोर्ट, 1982–83 पृ 433) इस काल में भारत की सैन्य क्षमता पाकिस्तान से बहुत अधिक थी। 1985 में भारत का कुल सैन्य व्यय 8,921 मिलियन अमेरिकी डॉलर था। जबकि पाकिस्तान का 2,957 मिलियन अमेरिकी डॉलर व्यय था। (इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ स्ट्रैटजिक स्टडीज, 1990) भारत–पाक के साथ व्यापारिक संबंध का इच्छुक था '1995 में भारत ने पाक को विशेष राज्य का दर्जा दिया। पाकिस्तान भारत के साथ बेहतर व्यापार का पक्षधर नहीं था। 1990 के दशक के अंत में पाकिस्तान के निर्यात का कुल 0.42 प्रतिशत भारत से हुआ और भारत से आयात भी पूरे आयात का मात्र 1. 22 प्रतिशत था। (इंटरनेशनल मोनेटरी फंड, 1998) 1999 में कारगिल संकट भारत के सामने आया। इस बार पाकिस्तान ने सैन्य दल को मुजाहिद्दीन के भेष में भेजा, जिन्हें कश्मीर में नियंत्रण रेखा पर उन स्थानों पर कब्जा करने को कहा गया जिन्हें भारतीय सेना ने शीत युद्ध के दौरान खाली कर रखा था। (रीडेल, 2002 पृ. 2) दिसम्बर 2001 में एक नई समस्या पाकिस्तान ने पैदा की जब आतंकवादियों ने भारतीय संसद पर हमला किया तथा क्रुद्ध भारत ने सीमित युद्ध का भय दिखाया। (वैगनर, 2004 पृ. 479–507) 2008 में मुंबई में हमला हुआ। 2009 में तनाव में पुनः तीव्रता से वृद्धि हुई पुनः धीरे–धीरे समाप्त होने लगी। 2004 से 2008 के बीच दोनों देशों के बीच व्यापारिक गतिविधियाँ बढ़ी। भारत–पाकिस्तान व्यापार 2004–05 में 521 मिलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़कर 2007–08 में लगभग 2 बिलियन अमेरिकी डॉलर पहुँच गया। (द टाइम्स ऑफ इण्डिया, 24 जुलाई, 2008) इसी समय असैन्य परमाणु व्यापार पर सहमति हुई एन. एस.जी के मुख्य संघटकों की मदद से नई महाशाक्ति बनने को तैयार बैठे चीन के विरुद्ध भारत तथा अमेरिका के हितों का सम्मिलन हुआ। (ब्लैंक, 2007, पृ 1–24) इसके बाद धीरे–धीरे पाक–चीन धुरी की वजह से आर्थिक–क्रियाकलापों में कमी दिखी।

भारत व पाकिस्तानी नेतृत्त्व को देखें तो भारतीय प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू भारतीय विदेश नीति निर्धारकों में प्रमुख थे। आदर्शवाद तथा यथार्थवाद के बीच का यथेष्ट विरोधाभास उनकी नीतियों की विशेषता थी। (बंछोपाध्याय, 1979 पृ. 291–98) सेना प्रयोग के संदर्भ में देखे तो नेहरू की अपेक्षा लाल बहादुर शास्त्री व इन्दिरा गाँधी ने सेना का प्रयोग बेहतर तरीके से किया। शास्त्री ने पाकिस्तानी सेना को सन् 1965 में भारत से खदेड़ा तथा इन्दिरा गाँधी ने सन् 1971 में पाकिस्तान को निर्णायक रूप से परास्त किया। (मानसिंह, 1984 पृ. 302–08) कांग्रेस पार्टी की सरकार के बाद पहली बार अस्तित्त्व में आयी जनता दल की सरकार में संबंधों को सुधारने की कोई पहल नहीं की। स्वतन्त्रता प्राप्ति के तत्पश्चात पाकिस्तान के दो मुख्य नेता मुहम्मद अली जिन्ना व लियाकत अली खॉन की मृत्यु हो गयी, जुल्फिकार अली भुट्टो भी उम्मीदों पर खरे नहीं उतरे। बेनजीर भुट्टो और नवाज शरीफ दोनों ने अपेक्षाए तो बढ़ा दी किन्तु वे उन्हें पूरा करने में असफल रहे। जैसे–जैसे पाकिस्तान अक्षमता तथा भ्रष्टाचार के दलदल में फँसता चला गया, सेना ने अपनी स्थिति मजबूत बनाई। सन् 1977, 1999 में पाकिस्तान में तख्तापलट की घटनाएँ हुई।

भारत के प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी ने 1998 में परमाणु परीक्षण के बाद दोनों देशों के बीच संबंध बेहतर बनाने का यत्न किया। 1999 में लाहौर यात्रा कर और 2001 ने आगरा शिखर वार्त्ता कर संबंधों को बेहतर किया। कारगिल युद्ध के बाद उन्होंने मैत्री के विचार को त्याग दिया। मनमोहन सिंह ने पाकिस्तान के साथ समान नम्यता दिखाई। 2008 के आतंकी हमले के बाद दोनों देशों के बीच शांति प्रक्रिया मंद पड़ गयी। भारत में हिन्दुत्त्व की विचारधारा के उदय तथा पाकिस्तान के प्रति तेजतर्रार रुख ने राजनीतिक समझौते को कठिन बना दिया। (बसरूर, 2018 पृ. 24) पाकिस्तान में लोकतान्त्रिक शांति नहीं थी। लोकतन्त्र और सैन्य शक्ति के गठजोड़ व कट्टरतावाद से युक्त पाकिस्तान मैत्री के विरुद्ध रहा।

भारत–पाक संबंधों में नरेन्द्र मोदी के नेतृत्त्व में सरकार बनने के बाद ही बदलाव आने लगे। नवाज शरीफ को मई 2014 में मोदी के शपथ ग्रहण समारोह में आमंत्रित किया गया था। अगस्त 2014 तक, मोदी सरकार के पहले वर्ष में संघर्ष विराम उल्लंघन की लगभग 800 घटनाएं हुई। पाकिस्तान के उच्चायुक्त अब्दुल बासित ने नई दिल्ली की आपत्तियों के बावजूद हुर्रियत नेताओं से मुलाकात की। जिसके कारण अगस्त

2014 में विदेश सचिव स्तर की वार्ता बंद कर दी गई। नवंबर 2014 में सार्क सम्मेलन में मोदी और शरीफ काठमांडू में आमने–सामने आए, लेकिन द्विपक्षीय बैठक से कतराते रहे। मोदी की एक और पहल के तहत विदेश सचिव एस जयशंकर ने सार्क सम्मेलन के दौरान अपने पाकिस्तानी समकक्ष एजाज अहमद चौधरी मुलाकात की। 29 अप्रैल 2015 को पाकिस्तानी प्रधानमंत्री नवाज शरीफ ने कहा कि भारत के साथ अच्छे पड़ोसी संबंधों की हमारी इच्छा पारस्परिक नहीं रहीं है। भारत ने एकपक्षीय रूप से हमारी द्विपक्षीय वार्ता प्रक्रिया को बहाने से टाल दिया। मोदी ने उनके इस बयान को गलत साबित कर दिया जब उन्होने 16 जून 2015 को नवाज शरीफ को रमजान की शुभकामनाएं दी और पाकिस्तानी मछुआरों को भारतीय जेल से छोड़ने के फैसले के बारे में बताया। 10 जुलाई 2015 को उफा (शंघाई) में शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) की तर्ज पर भारत और पाकिस्तान के बीच एक बैठक हुई। उस बैठक ने आतंकवाद पर एनएसए–स्तर पर बातचीत का फैसला किया गया। पाकिस्तान द्वारा कश्मीर को मेज पर लाने पर जोर देने के बाद भी आखिरकार इस बातचीत को खत्म कर दिया गया। मोदी ने 25 दिसंबर 2015 को सद्भावना संकेत के रूप में नवाज शरीफ को जन्म दिवस की बधाई देने के लिए लाहौर की यात्रा की। इसके एक हफ्ते बाद, 2 जनवरी 2016 को, जैश–ए–मोहम्मद ने पठानकोट (पंजाब) में भारतीय एअर बेस पर हमला किया। भारत ने इस क्षेत्र में शांति के लिए प्रयास किया, आतंकवादी हमले के रूप में उसका उल्टा जवाब पाकिस्तान ने दिया। 18 सितंबर 2016 को, कश्मीर के उरी में सेना के एक रेजिमेंट पर पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवादियों द्वारा हमला किया गया था, जिसके कारण 20 भारतीय सैनिकों की मौत हो गई थी। इसने भारत को अधिकृत कश्मीर में आतंकी शिविरों पर सर्जिकल स्ट्राइक करने के लिए प्रेरित किया। साथ ही आतंकवादी समूहों के साथ पाकिस्तान की भागीदारी को सबके सामने लाकर उसे घुटनों पर झुकने के लिए मजबूर किया। भारत अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी कूटनीति में काफी सफल रहा है। बावजूद इसके कश्मीर में जारी हिंसा और पाकिस्तान स्थित आतंकवादी संगठनों द्वारा आतंकवादी गतिविधि के बढ़ते खतरे के साथ, परमाणु–सशस्त्र पड़ोसी भारत और पाकिस्तान के बीच गंभीर सैन्य टकराव पर तनाव और चिंताए अधिक है। (वर्ल्ड फोकस अगस्त 2019, पृ31–41)

फरवरी 2019 में जैश–ए–मोहम्मद ने पुलवामा में घातक हमला किया था और सी.आर.पी.एफ. के 50 जवान शहीद हो गये। भारत ने तत्काल पुरजोर प्रतिक्रिया दी और पाकिस्तान के खिलाफ कार्यवाही की माँग की। अंतर्राष्ट्रीय समुदाय ने फरवरी 2019 में पुलवामा में सीमा पार आतंकवादी हमले की कड़ी निंदा की। भारतीय वायु सेना ने 25 फरवरी 2019 को पाकिस्तान के बालाकोट में सर्जिकल स्ट्राइक की एक सफल हवाई हमला किया था। पी.एम. मोदी ने मई 2019 में अपने शपथ ग्रहण समारोह के दौरान पाकिस्तान को आमंत्रित नहीं किया था, जो उन्होने पाँच साल पहले किया था और इस तरह एक मजबूत संदेश दिया था कि भारत पाकिस्तान के साथ अपने व्यावहारिक संबंधों को जारी रखने के लिए तैयार नहीं है, जब तक कि पाकिस्तान अपना रवैया नहीं बदलता है। विशेष रूप से सीमा पार आतंकवाद को नहीं बंद करता है।

भारत–पाक संबंधों के मूल में शत्रुता और प्रतिद्वंद्विता है। भारत और पाकिस्तान भूख, गरीबी, भ्रष्टाचार, अशिक्षा, औद्योगिक क्षेत्रों में पिछड़ापन, बेरोजगारी जैसी समस्याओं से पीड़ित है। ये सभी समस्याएं अंतर–संबंधित है। सैन्य प्रतिस्पर्धा के कारण दोनों देश सैन्य उद्देश्य में भारी भरकम राशि खर्च कर रहे हैं। जातीय समस्या, सुरक्षा संकट, आतंकवाद, धार्मिक कट्टरवाद, चीन की विस्तारवादी नीति जैसी समस्या संबंधों में बाधा बनी हुई है।

REFERENCES

इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ स्ट्रैटजिक स्टडीज (1990) *द मिलिट्री बैलेंस 1999–2000,* ऑक्सफोर्ड, ऑक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस

इंटरनेशनल मोनेटरी फंड रिपोर्ट, 1998

बंघोपाध्याय, जयंतानुज (1979) *द मेकिंग ऑफ इंडियाज फारेन पॉलिसीः डिटर्मिनेन्ट्स इंस्टीट्यूशन्स, प्रोसेसेज एंड पर्सनैलिटीज,* नई दिल्ली, अलायड पब्लिशर्स

बाजपेयी, अरुणोदय (2012) *समकालीन विश्व एवं भारतः प्रमुख मुद्दे और चुनौतियाँ,* नोएडा, डॉर्लिंग किंडरस्ले (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड

बसरूर, राजेश एम (2018) *भारत–पाकिस्तान संबंध युद्ध और शांति के बीच,* सुमित गांगुली, संपा. भारत की विदेश नीति पुनरावलोकन एवं संभावनाएँ नई दिल्ली, ऑक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस।

ब्लैंक, स्टीफेन (2007) द जियो स्ट्रैटजिक इंप्लीकेशन्स ऑफ द इंडो अमेरिकन स्ट्रैटजिक त्थ्पार्टनरशिप, *इंडिया रिव्यू* वाल्यूम 6 अंक 1

कोहन, स्टीफेन पी. (2005) *द आइडिया ऑफ पाकिस्तान,* नई दिल्ली, ऑक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस

मानसिंह, सुरजीत (1984) *इंडियाज सर्च फार पावरः इंदिरा गाँधीज, फॉरेन पॉलिसी 1966–1986,* नई दिल्ली, सेज पब्लिकेशन्स

मिंज, जसिन्ता (2013) *कारगिल संघर्ष के पश्चात भारत–पाकिस्तान संबंध,* नई दिल्ली, अल्फा पब्लिकेशन्स

रियकोर्ट, अमैरी डी. (1982–83) इंडिया एंड पाकिस्तान इन द शैडो ऑफ अफगानिस्तान, *फारेन अफेयर्स* वाल्यूम 81, नं० 2

हैरिस, जॉन (2015) हिन्दू नेशनलिज्म इन ऐक्शनः द भारतीय जनता पार्टी एंड इंडियन पॉलिटिक्स, *साउथ एशिया जर्नल ऑफ साउथ एशिया स्टडीज,* वाल्यूम 34 नं० 4

रीडेल ब्रूस (2002) *अमेरिकन डिप्लोमेसी एंड द 1999 कारगिल समिट एट ब्लेयर हाउस,* फिलाडेल्फिया, पेनसिलवानिया, यूनिवर्सिटी ऑफ पेनसिलवानिया, सेन्टर फॉर द एडवांस्ड स्टडी ऑफ इंडिया

द दाइम्स ऑफ इंडिया, 24 जुलाई, 2008

देसाई, एल राधिका, *इंडिया पाकिस्तान डिप्लोमेसीः द मीनिंग ऑफ ए फाल स्टेट,* 26 मार्च, 2018

वैगनर, आर हैरीसन (2004) इंडिया एंड पाकिस्तानः बारगेनिंग इन द शैडो ऑफ न्यू–क्लियर वॉर, *जर्नल ऑफ स्ट्रैटजिक स्टडीज* वाल्यूम 27 अंक 4

वर्ल्ड बैंक रिपोर्ट, 1999–2000

जोशी, पी.सी. (2013) *ए मुल्लाह–मिलिट्री इंटरप्राइजेज अनलिमिटेड,* नई दिल्ली, कल्पज पब्लिकेशन्स

गांगुली, सुमित (2002) *कनफ्लिक्ट अन एन्डिंगः इण्डिया पाकिस्तान टेंशन्स सिन्स,* नई दिल्ली, ऑक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस